ओम् ।

श्री पंच-प्रतिक्रमण-सूत्राणि

(विधि सहित)

भगवान महावीर के २५०० वर्षीय
निर्वाणोत्सव के
उपलक्ष में

प्रकाशक :—

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ



कलकत्ता

विक्रम सं० २०३१ मूल्य रु० २)

increase in the angular momentum of the atom is—

(1) 6.63×10^{-34} J.s.

प्रकाशक
श्री जैन श्वे० खतरगच्छ संघ
२५, कालाकर स्ट्रीट, कलकत्ता-७

पर्यूषण पर्व १९७४

मुद्रक—
सुराना प्रिन्टिंग वर्क्स
२०/१ रवीन्द्र सरणी
कलकत्ता-७

श्री शान्तिनाथाय नमोनमः

कलकत्ते जैसे शहर में जहाँ पर बड़े मन्दिरजी में शान्तिनाथ भगवान की मनमोहनी एवं प्रत्यक्ष चमत्कारी प्रतिमाजी का दर्शन करके मन आनन्दित होता है। जिनकी नियमित तौर पर पूजा करनेवाले श्रावक की सदा ही सर्वप्रकारेण उन्नति होती ही है। जिनके प्रत्यक्ष प्रभाव से कलकत्ते के संघ की वृद्धि तथा उन्नति हो रही है। श्रावक समाज सर्वप्रकारेण संपन्न है तथा साधु-साध्वीगणों के चातुर्मास प्रायः अच्छी संख्या में होते रहते हैं तथा उनकी प्रेरणा से श्रावक समाज धर्म-परायण है तथा तपस्या एवं दान में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। श्रावक समाज की क्रियाकाण्ड में विशेष रूची दिखाने के कारण क्रिया-काण्ड की तथा दैनिक आवश्यकों के लिये पुस्तकों के प्रकाशन की भी आवश्यकता प्रतीत होती है।

हमलोगों के सोभाग्य से १९७२ के चातुर्मास में वर्त्तमान गणाधीश्वर श्री हेमेन्द्रसागरजी महाराज के आज्ञानुयायी पूज्य मुनिश्री कल्याणसागरजी महाराज एवं विदुषी साध्वियाँ श्री समताश्रीजी, श्री सज्जनश्रीजी आदि-आदि १३ साध्वियों का चातुर्मास हुआ।

उनके उपदेश से 'पंचप्रतिक्रमण विधि सहित' पुस्तक के प्रकाशन की प्रेरणा से उत्साहित होकर संघ की इच्छा हुई कि ऐसी पुस्तक की आवश्यकता तो काफी समय से है—मगर इसे प्रकाशित कौन करे? तथा इस के खर्च की पूर्ति कैसे करें?

increase in the angular momentum of the atom is—

(1) 6.63×10^{-34} J.s.

लिखने की आवश्यकता नहीं—हमलोगों ने इस प्रस्ताव को हमारे उत्साही धर्मपरायण बाबू मोतीचदजी भूरा एव श्री श्रीचदजी बोथरा के सामने रखा। उन्होंने तुरतही कहा—यह कार्य तो करने का ही है। हर व्यक्ति से १०१) करके लेवें तथा पुस्तक प्रकाशन की व्यवस्था करें।

यद्यपि पुस्तक के प्रकाशन में इसकी कीमत ज्यादा पडी है। मगर हर व्यक्ति इसका उपयोग कर सके तथा इसका दुरुपयोग भी न हो, इसलिये इसका शुल्क नाम मात्र के लिये रखा है।

पुस्तक प्रकाशन में कई पुरानी पुस्तकों का सहारा लिया गया है। तथा प्रूफ के सशोधन में श्री भवरलालजी नाहटा ने अपना काफी समय दिया है एतदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं।

इस पुस्तक से जनता कुछ भी लाभान्वित होगी तो दाताओं का आर्थिक सहयोग एव हमारा परिश्रम सफल समझेंगे।

दीपचन्द नाहटा
व्यवस्थापक





नम्र निवेदन

यह तो आप सबही जानते हैं कि इस पुस्तक के प्रकाशन में अनेक सहधर्मी बन्धुओं ने आर्थिक सहयोग देकर इसके प्रकाशन में अपना योग दिया है, ताकि जनता ज्यादा से ज्यादा इसका उपयोग कर सके— इसी ख्याल से पहले इसकी कीमत १ रु०) रखने का विचार था। मगर जबसे पुस्तक प्रेस में गई तब से आजतक में कागज आदि की कीमत इतनी बढ़ गई है कि बाध्य होकर इसकी कीमत रु० २) रखने पड़े हैं फिरभी इस प्रकाशन में काफी क्षति रहेगी, जोकि समाज के दानी बन्धुओं से ही पूर्ण होगी।

पुस्तक के प्रकाशन तक जिन-जिन दाताओं से आर्थिक सहयोग मिला है उनकी नामावली इसमें प्रकाशित कर रहे हैं।

व्यवस्थापक



increase in the angular momentum of the atom is—

(1) 6.63×10^{-34} J.s.

कुछ ज्ञातव्य वषय

आसन

सामायिक, प्रतिक्रमण आदि में आसन ऊनीही होना चाहिये, जिससे कि जीवों की जयणा हो एव इसके माप का तो यही प्रमाण है कि आसन उतना बडा जरूर होना चाहिये कि उसपर पालथी मारकर ठीक से बैठा जाय।

मुँहपत्ति

यह भी जयणा के लिये ही है। इसका रंग सफेद ही होना चाहिये। यह सूती कपडे की होती है तथा अपने हाथ के एक गिरट तथा चार अगुल-चौडी तथा उतनी ही लबी होनी चाहिये। जिसके ४ पुरद करके मुख के आगे रखी जा सके।

चरवला

लकडी की डडी, तथा सफेद ऊनकी फलियों का होता है। डडी करीबन् २४ की होनी चाहिये तथा औरतों एव पुरुषों की डंडी मे थोडा फारक भी होता है। औरत चौकोन एव पुरुष गोल डडी रखते हैं।

चैत्यवंदन

प्रभु के सामने जब चैत्य-वदन दाँया गोडा ऊचा करके करते हैं तो वह धर्म का प्रतीक है—जैसे इन्द्र महाराज ने भगवान के सन्मुख किया एव बाया गोडा ऊँचा करते हैं तो वह दीनता दर्शाने का प्रतीक है।

कायोत्सर्ग

सामायिक या प्रतिक्रमण में या अन्यान्य समय भी जब कायोत्सर्ग करना हो तो पालखी मारकर या खड़े होकर करना चाहिये। कायोत्सर्ग के समय शरीर हिलना, मुंहसे उच्चारण करना, या शरीर के अन्यान्य अंगोंका इधर-उधर करना आसन बदलना मना है। एक ध्यान होकर दृष्टि को नाककी डंडी पर केन्द्रित करके ध्यान करना चाहिये।

देवगुरु-सन्मुख

प्रभु के दरबार में या गुरुजनों के पास कभी भी खाली हाथ नहीं जाना चाहिये। कमसे कम चावल और अधिक में चावल, फल, मिठाई चढ़ानी चाहिये, तथा प्रभुजी की मूर्ति से या गुरु महाराज से कुछ दूर बैठकर वन्दना नमस्कार, स्तवन, भजन या वार्तालाप करनी चाहिये।

---

increase in the angular momentum of the atom is—

(1) 6.63×10^{-34} Js

सहयोगी बन्धुओं की सूची

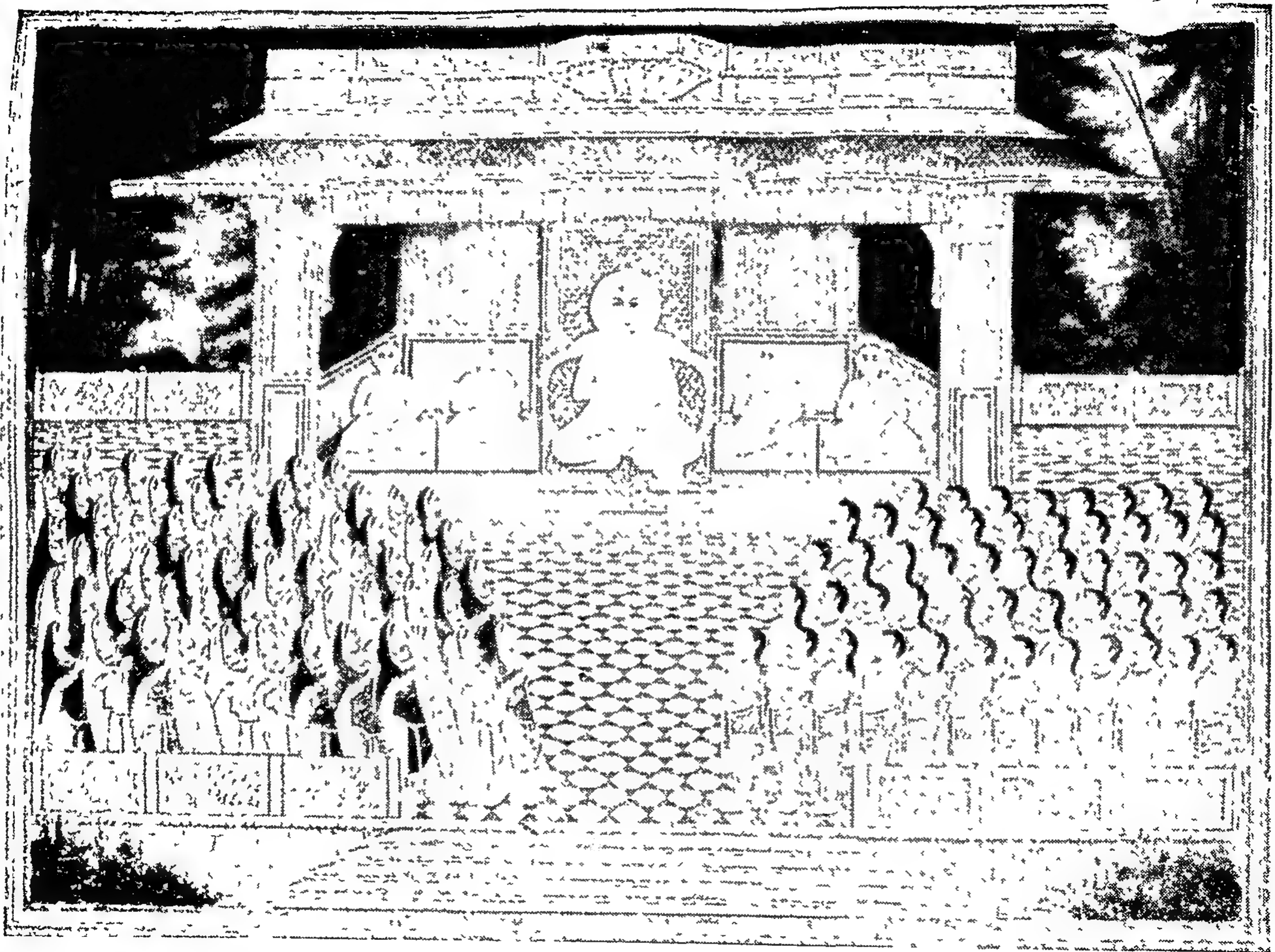
१०१)	श्री परीचदजी बोथरा	कलकत्ता
१०१)	,, श्रीचन्दजी बोथरा	,,
१०१)	,, गभीरचन्दजी बोथरा	,,
१०१)	,, मोतीचन्दजी भूरा	,,
१०१)	,, रावतमलजी हरखचन्दजी बोथरा	,,
१०१)	,, शकरदान नाहटा सुकृत ट्रस्ट	,,
१०१)	,, रतनलालजी झवरलालजी नाहटा	,,
१०१)	,, मेघराजजी माणकचन्दजी कोठारी	,,
१०१)	,, वीरेन्द्रसिहजी भाँण्डिया	,,
१०१)	,, हीरालालजी लूणिया	,,
१०१)	,, लछीरामजी विजय चदजीलूणिया	,,
१०१)	,, लछमनराजजी मेहता	,,
१०१)	,, प्रेमचदजी दूगड	,,
१०१)	,, दीपचदजी नाहटा	,,
१०१)	, कालूरामजी माणकचदजी गोलेच्छा	,,
१०१)	,, लालचदजी ज्ञानचद लूनावत	,,
१०१)	,, दीपचदजी भूरा (स्व० श्री विनयचदजी भूरा की पुण्य स्मृति में	,,
१०१)	,, रतनलालजी सुराना	,
१०१)	,, ज्ञानचदजी शान्तिचन्दजी कोचर	,,
१०१)	,, फूलचदजी कल्याणचन्दजी चोरडिया	,,
१०१)	श्री नथमलजी गाँधी	,,

१०१)	,, पदमचंदजी दूगड़	,,
१०१)	,, गुलाबचंदजी भण्डारी	,,
१०१)	,, नवरतनमलजी सुराना	,,
१०१)	,, रतनचंदजी सुमतिचंदजी कोचर	,,
१०१)	,, पूनमचंदजी वेद	टाटानगर
१०१)	,, सोहनलालजी गुलेच्छा	कलकत्ता
१०१)	,, केसरीचंदजी दुगड़	,,
१०१)	,, मोहनलालजी गुलेच्छा	,,
१०१)	,, बुलाकीचंदजी ढ़ड्ढा	,,
१०१)	,, गुमानमलजी विमलचंदजी सेठिया (स्व० गुणचंदजी सेठिया की पुण्य-स्मृति में)	,,
१०१)	,, जतनलालजी शान्तिलालजी सुराणा	,,
१०१)	,, चन्द्रपतसिंहजी कोठारी	अजीमगंज
१०१)	,, दीपचंदजी प्रकाशचन्दजी डागा	कलकत्ता
१०१)	,, मोतीलालजी मगनमलजी राखेचा	,,
१०१)	सुश्री विमलकुमारी श्रीमाल	,,
१०१)	,, मंजु दुगड़	,,
१०१)	,, मानिककुमारी नाहटा	,,
१०१)	,, लक्ष्मीदेवी भूरा	,,
१०१)	,, स्नेहलता पारख	,,
१०१)	,, छगनीबाई वैद	बीकानेर
१०१)	,, लीलावती नाहर	कलकत्ता
१०१)	,, शोभावती छाजेड़	,,
१०१)	श्री केसरिया एण्ड कं०	,,
१०१)	,, सम्पतलालजी सुनीलकुमारजी झँवरी	,,

विषयानुक्रमणिका

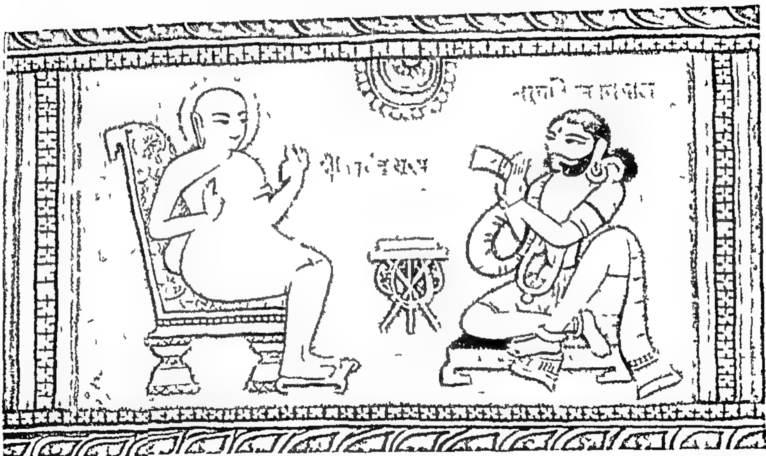
शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५	३	आविराहिओ	अविराहिओ
५६	६	दुक्कड़ं	दुक्कड़ं
६५	६	करना	कहना
१२५	५	शिवशम	शिव शर्म
१२७	१४	आराधव	आराधवा
१३३	११	अराधव	आराधवा
१३३	१३	देृफी	देृशी
१४३	३	ग्रहर	प्रहर
१७६	१६	आशानता	आशातना
२००	१	पक्खिए	पक्खिआए
२२७	१६	दासा	ऐसा
२४४	१८	घृति	धृति
२८६	१	सभव	संभम
२८६	१६	वंद्आ	वंदिआ
२८७	८	तिउ-करा	तिउ-क्खरा
२८७	१५	जूअ-मंडिआ	जूअ-जव-मंडिआ
२६३	२	उल्लूअ	उल्लूरिअ
३२५	८	दि्वर्णं	द्विर्णं
३४३	४	जीवजीव	जावजीव
३६३	१५	लखभी	लखमी
४०२	२०	मूत्रो	मूत्र
४०६	१३	चाल की	चावल की
४०७	२०	उगैरह	वगैरह
४२२	७	अराधो	आराधो
४२८	७	गणधिपा	गणाधिपा



५२ वीर ६४ योगिनियां सेवा में उपस्थित

परमपूज्य द्वितीय दादा मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरिजी



जन्म स० ११९७ दीक्षा स० १२०३ आचार्य पद १२०५ स्वर्गवास स० १२२३ द्वि० भाद्रपद शुक्ल १४

॥ ॐ ॥

श्रीपार्श्वनाथाय नमः।

खरतरगच्छीय

श्री पंचप्रतिक्रमण सूत्र

—卐—

प्राभातिक सामायिक लेने की विधि।



(सर्व प्रथम श्रावक श्राविका पडिलेहन किये हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर, पट्टा प्रमुख उच्च स्थान की प्रमार्जना करके ठवणी स्थापनाचार्यजी पुस्तक, माला आदि को स्थापन करे। बाद में कटासना, मुहपत्ति, चरवला ले सामायिक करने की जगह पूँज कर बैठे। बैठ कर बाँये हाथ में मुहपत्ति ले कर मुहके सामने रखे। दाहिना हाथ स्थापन की हुई पुस्तक आदि के सामने करके तीन नवकार गिनें)—

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरि-याणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं।

एसो पच णमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसिं । पढम हवई मगलं ॥ १ ॥

(इस प्रकार तीन नवकार गिनें । यदि स्थापनाचार्यजी हो तो तेरह बोल से स्थापनाजी की पडिहेलना करे)

शुद्ध स्वरूप धारे (१), ज्ञान (२), दर्शन (३), चारित्र (४), सहित सद्दहणा शुद्धि (५), प्ररूपणा-शुद्धि (६), दर्शन-शुद्धि (७), सहित पाँच आचार पाले (८), पलावे (९), अनुमोदे (१०), मनोगुप्ति (११), वचन-गुप्ति (१२), कायगुप्ति आदरे (१३) ।

(पीछे चरवला मुहपत्ति हाथमे लेकर गुरुजी को या स्थापना-चार्यजी को खडे होकर वंदन करे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ।

(इस प्रकार तीन खमासमण देना, पीछे खडे खडे)

इच्छकार भगवन् ! सुहराई, सुहदेवसी, सुख-तप शरीरनिराबाध सुखसयमयात्रा निर्वहते हो जी ? स्वामी साता है जी ?

(ऐसा कह कर, नीचे बैठकर, दाहिने हाथ को चरवले पर या नीचे रखकर, मस्तक नमा कर नीचे का सूत्र बोले)—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं खामेउं इच्छं, खामेमि राइअं। जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अन्तरभासाए उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(इस प्रकार बोल कर पीछे नीचे लिखे अनुसार बोलना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(ऐसा बोल कर मुहपत्ति की पडिलेहना नीचे लिखे पच्चीस बोल मन में बोलते हुए करे)।

१ सूत्र अर्थ साचो सद्दहूं, २ सम्यक्त्व-मोहनीय, ३ मिथ्यात्व-मोहनीय, ४ मिश्र-मोहनीय परिहरूं, ५ कामराग, ६ स्नेहराग, ७ दृष्टिराग परिहरूं।

(ये सात बोल मुहपत्ति खोलते समय कहने चाहिये)

१ ज्ञान विराधना, २ दर्शनविराधना, ३ चारित्र-विराधना परिहरू । ४ मनोगुप्ति, ५ वचनगुप्ति, ६ कायगुप्ति आदरू । ७ मनोदंड, ८ वचनदंड, ९ कायदण्ड परिहरू ।

(ये नव बोल दाहिने हाथ के पडिलेहन के समय कहने चाहिए)

१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरू ४ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरू ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र आदरू ।

(ये नव बोल बाँये हाथके पडिलेहन के समय कहने चाहिये। अब नीचे लिखे पच्चीस बोलों से अंग की पडिलेहना करे अर्थात् जिस अंग का नाम आवे उसी अँग को मुहपत्ति से स्पर्श करे)—

१ कृष्णलेश्या, २ नीललेश्या, ३ कापोतलेश्या, ये तीन मस्तके परिहरू । १ ऋद्धिगारव, २ रसगारव, ३ सातागारव ये तीन मुखे परिहरू । १ मायाशल्य, २ नियाणशल्य, ३ मिथ्यादर्शनशल्य ये तीन हृदये परिहरू । १ क्रोध, २ मान, ये दोनो दाहिने कधे परिहरू । १ माया, २ लोभ ये दोनो वाये कधे परिहरू । १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ये तीन वांये

हाथे परिहरूं । १ भय, २ शोक, ३ दुर्गंछा ये तीन दाहिने हाथे परिहरूं । १ पृथ्वीकाय, २ अप्‌काय, ३ तेऊकाय ये तीन बांये चरणे परिहरूं । १ वायुकाय, २ वनस्पतिकाय, ३ त्रस्‌काय ये तीन दाहिने चरणे परिहरुं ।

(इस प्रकार मुहपत्ति की पडिलेहना करे। पीछे खड़े होकर)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्‌ ! सामायिक संदिसावुं ? 'इच्छं' ।। इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्‌ ! सामायिक ठाउं ? 'इच्छं' ।। इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(अब यहाँ हाथ जोड़ मस्तक नमा कर तीन नवकार गिने)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

(तीन वार नवकार मंत्र बोले। पीछे 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी'। ऐसा कहकर स्वय तीन वार 'करेमि भन्ते' उच्चरे। यदि गुरुमहाराज या कोई बड़े हों तो वे तीन वार उच्चरावें)

करेमि भंते ! सामाइय, सावज्ज जोग पच्चक्खामि। जाव नियम पज्जुवासामि, दुविह तिविहेण, मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिकमिउ, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग,-पणग-दग-मट्टी मक्कडा संताणा-संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाण संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगा-रेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहाँ एक लोगस्सका या चार नवकार का काउस्सग करें। पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट लोगस्स कहें।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे

सुविहिसुव्वय नमिजिण च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अभिथुआ, विहुय—रयमला पहीणजरमरणा। चउवमपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभ, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर खमासमण दे कर)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बैसणो संदिस्साहु? 'इच्छ'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बैसणो ठाउ? 'इच्छ'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिस्साहु! 'इच्छ'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? 'इच्छ' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(इस प्रकार खमासमण दे कर आठ नवकार गिने । शीत-कालमें वस्त्र की आवश्यकता हो तो)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पांगुरणो संदिसावुं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पांगुरणो पडिग्गहुँ ? 'इच्छं' ।

(इस प्रकार दो खमासमण देकर वस्त्र ग्रहण करे । पीछे दो घड़ी (४८ मिनिट) स्वाध्याय ध्यान करे या प्रतिक्रमण करे । सामायिक में या पौषध में सामायिक और पौषधवाला व्रती श्रावक आपस में वंदन करे तो 'वन्दामो' कहे और अव्रती वन्दन करे तो 'सज्झाय करेह' ऐसा कहे ।)

॥ इति सामायिक लेने की विधि ॥

—※※—



राइ-प्रतिक्रमण-विधि

—०—

(प्रथम पूर्वोक्त रीति से सामायिक लेकर पीछे *)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवन्दन करूं ? 'इच्छं' ।

(ऐसा कह कर बायाँ घुटना ऊंचा करके नीचे लिखे अनु-सार "जयउ सामिय०" बोलना)

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण । भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुँ दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागयसंपइअ, वंदु जिणसव्वेवि ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिण-वराण विहरंत लब्भइ । नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स

---

* पौषधमें कुसुमिण दुसुमिण का काउस्सग करके पीछे चैत्यवन्दन करते हैं ।

नव साहू गम्मइ। संपइ जिणवर वीस मुणि बिहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडिसहस्स दुअ थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ। चउसय छायासीया, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ३ ॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडि लक्ख तेवन्ना। अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पडिमा ॥ ४ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुण्डरीआणं पुरिसवर-गन्धहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं

तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाण ॥ ८ ॥ सव्वन्नूण सव्वदरिसीण, सिवमयलमरुअमणतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेय ठाण सपत्ताण, नमो जिणाण, जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। सपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥ १० ॥

जावति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरि-अ-लोए अ। सव्वाइ ताइ वदे, इह सतो तत्थ सताइ ॥ १ ॥

जावत केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदड-विरयाण ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहर पास, पास वदामि कम्मघणमुक्क। विसहरविसनिन्नास, मगल-कल्लाण आवास ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंगमत, कठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जति उवसाम ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्ग ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणिकप्पपायवब्भहिए। पावति अविग्घेण,

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्री आचार्यजीमिश्र ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजीमिश्र' ।२।

(यहांपर धर्माचार्य का नाम लेकर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'जंगमयुगप्रधान भट्टारक वर्त्तमान....मिश्र' । ३ ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजीमिश्र' । ४ ।

(कह कर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर, गोडाली आसन से बैठ कर, मस्तक नमा कर, बायें हाथ से मुहपति मुख के आगे रख कर सव्वस्सवि० बोले ।)

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं,

पुरिससीहाण, पुरिसवरपुंडरीआण, पुरिसवर गन्ध-हत्थीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहिआण लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाण चक्खुदयाण, मग्गदयाण सरणदयाण बोहिदयाण ॥ ५ ॥ धम्मदयाण धम्मदेसयाण, धम्मनायगाण धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरन्त चक्कवट्टीण ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण-दसणधराण, विअट्टछउमाण ॥ ७ ॥ जिणाण जावयाणं, तिन्नाण तारयाण बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअ-गाण ॥ ८ ॥ सव्वन्नूण सव्वदरिसोण, सिवमयलमरुअ-मणन्तमक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं ठाण सपत्ताण, नमो जिणाण जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । सपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥ १० ॥

(अब खडे होकर बोलना ।)

करेमि भन्ते ! सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥